

कब उड़ जाए पँछी नहीं है इसका कोई ठिकाना विविध भजन



कब उड़ जाए पँछी,
नहीं है इसका कोई ठिकाना,
कब उड़ जाए पँछी नहीं है,
इसका कोई ठिकाना। bdi

तर्ज - चल उड़ जा रे पँछी।

कँकर पत्थर बीन के तूने,
सुन्दर महल बनाया,
लेकिन तेरा बँगला प्राणी,
तेरे काम न आया,
ये जीवन दो दिन का तेरा,
चलती फिरती माया,
छोड़ घोसला इक दिन बँदे,
पँछी को उड़ जाना,
कब उड़ जाए पँछी नहीं है,
इसका कोई ठिकाना। bdi

यह जीवन है घर भाड़े का,
इस पर न इतराना,
जब तक देता रहे किराया,
तब तक का आशियाना,
मालिक बन कर इस पर प्राणी,
हक न अपना जताना,
छोड़के घर को इक दिन बँदे,
तुझको पड़ेगा जाना,
कब उड़ जाए पँछी नहीं है,
इसका कोई ठिकाना। bdi

जग मे दिन और रात कमाई,
तू ने शोहरत दौलत,
लेकिन प्रभू के भजन की तूझको,
मिल न पाई फुरसत,
फिर न मिलेगी तुझको बँदे,
आज मिली जो मोहल्लत,
अत समय इक दिन तुझे प्राणी,

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी छानने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरूर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - <https://www.bhajandiary.com>



कब उड़ जाए पंछी नहीं है,
इसका कोई ठिकाना। bdi

कब उड़ जाए पंछी,
नहीं है इसका कोई ठिकाना,
कब उड़ जाए पंछी नहीं है,
इसका कोई ठिकाना। bdi

— भजन लेखक एवं प्रेषक —
श्री शिवनारायण वर्मा,
मोबा.न.8818932923

वीडियो उपलब्ध नहीं।
